KVK/SBG/2025-26/02

दाब
Layering

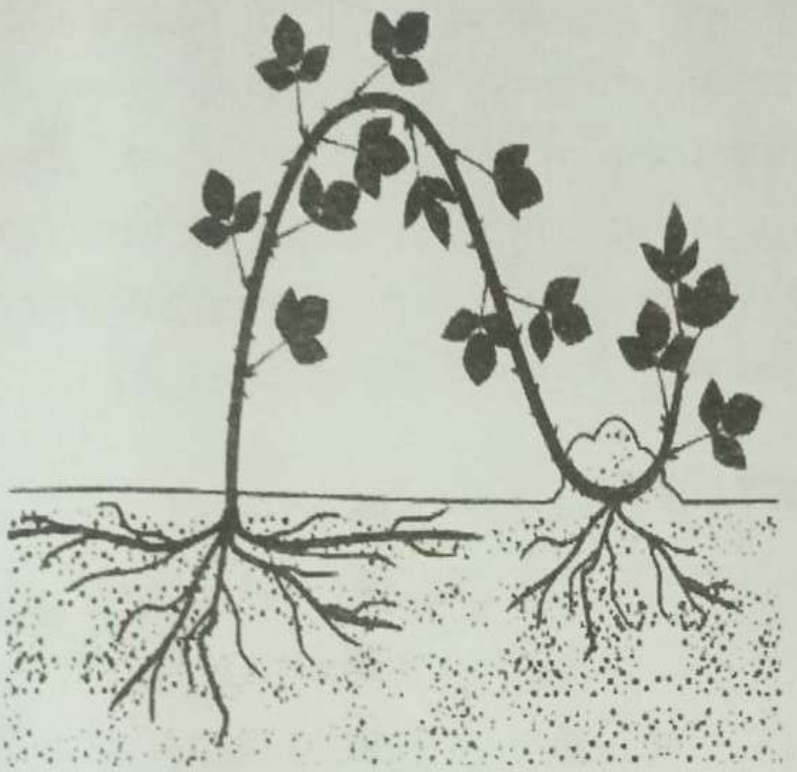

डॉ0 सुप्रिया सिंह
डॉ0 अशोक कुमार सिन्हा
श्री संजीव कुमार

कृषि विज्ञान केन्द्र
साहेबगंज (झारखण्ड)
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची

आभार :
भा0 कृ0 अनु0 प0, अटारी, जोन-IV पटना

4. खाई दाब (Tench layering)

इस विधि से सेब, नाशपाती और चेरी का प्रवर्द्धन होता है। इस विधि में पौधे की शाखा को क्षैतिज दिशा में उथले खाई में झुका दिया जाता है। जब इस पर फुटान हो जाता है तो फूटे हुए शाखा का आधारीय भाग मिट्टी की 5–10 सेमी. मोटी तह से ढ़क दिया जाता है। ढकाव के कारण यह प्रकाश के असर से दूर रहता हे। इसे निस्तेजी उपचार (etiolation treatment) कहते हैं। ऐसा होने से उस भाग

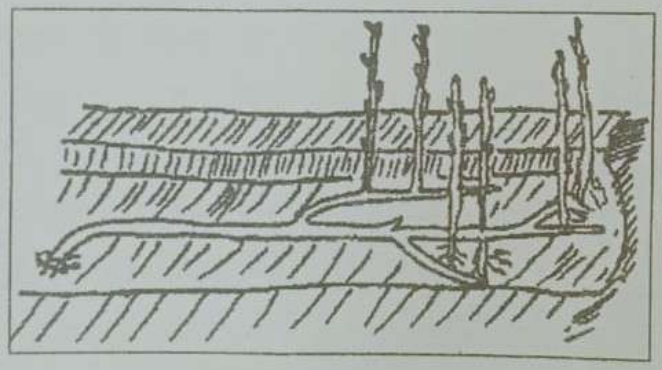

से ऑक्सिन गति नहीं कर पाता हैं, उसका सान्द्रण बढ़ जाता है। इससे जड़ फुटान में सरलता होती है। जड़ फुटा हुआ भाग मातृ शाखा से अलग कर पौधशाला में लगा दिया जाता है।

5. सिरा दाब (Tip layering)

यह ब्लैकबेरी और रास्पबेरी के प्रवर्द्धन का

प्राकृतिक तरीका है। इन पौधों में वर्तमान ऋतु की बढ़वार से शिरे (tip) पर जड़ का फुटान होता है। इस हेतु शाखा को जमीन में 2–5 सेमी. गहरा दबा दिया जाता है। शाखा का सिरा ऊपर की ओर मुड़ जाता है। जिससे वहाँ मोड़ (bend) बन जाता है। मोड़ बनने के बाद वहाँ से जड़ का फुटान हो जाता है। इसके बाद शाखा का फुटान हो जाता है। जड़ प्रस्फुटित शाखा को पुराने शाखा के टुकड़े के साथ अलग कर देते हैं। इसे पौधशाला में लगा दिया जाता है। पर्याप्त बढ़वार के बाद उसे खेत में लग दिया जाता है।

6. वायु दाब (Air layering)

इसे चाइनीज लेयरिंग, पॉट लेयरिंग, मारकोटेज या गूटी भी कहते हैं। पौधा तैयार करने हेतु एक वर्ष पुरानी, पेन्सिल इतनी मोटी शाखा का चुनाव किया जाता है। चयनित शाखा के आधार से 5–7 सेमी. दूरी पर 2.5–3.0 सेमी. आकार का छाल (bark) का छल्ला (ring) अलग कर लिया जाता है। छाल–हटे हुए भाग को जूट का बोरा या चाकू के पिछले फाल (rear blade) की मदद से खुरचकर पोशवाह को हटा दिया जाता है। इससे छिलका हटाये गए भाग पर छाल नहीं बनने पाता है। छाल हटाए गए भाग पर नम स्फैनम माँस (Sphagnus Mass) घास लगाकर ढक दिया जाता है। ढकाव से छाल

दाब (Layering)

यह प्रवर्द्धन की एक विधि है, जिससे पौधे की शाखा (shoot) को अपस्थानिक जड़ फुटान के लिए बाह्य किया जाता है जब वह मातृवृक्ष से जुड़ा हुआ ही रहता है। इस विधि में पौधे का एक ही शाखा जड़ और तना के रूप में विकसित होता है। जड़ निकलने पर शाखा (shoot) को मातृवृक्ष से अलग कर पौधशाला में उगाया जाता है तथा आने वाली बसंत या वर्षा ऋतु में खेत में लगाया जाता है।

दाब के प्रकार (Types of layering)

1. साधारण दाब (Simple layering)

इस विधि में पौधे का जमीन से छूता भाग या भूमि स्थित भाग से निकलने वाला भूःस्तारी को दाब के लिए प्रयोग किया जाता है। दाब के लिए सामान्यतः एक वर्ष पुराने शाखा का प्रयोग किया जाता है। शाखा अगर जमीन से ऊँचा रहता है तो इसे रस्सी के सहारे लोहे की कील या खूंटी की मदद से जमीन पर लिटाकर बाँध देते हैं। पेन्सिल इतनी मोटी, जमीन से छूते शाखा पर 2.5–3.0 सेमी. गोलाकार छल्ले के रूप में छाल को अलग कर दिया जाता है। इसे जमीन में दबा दिया जाता है। इसके चार – पाँच माह बाद

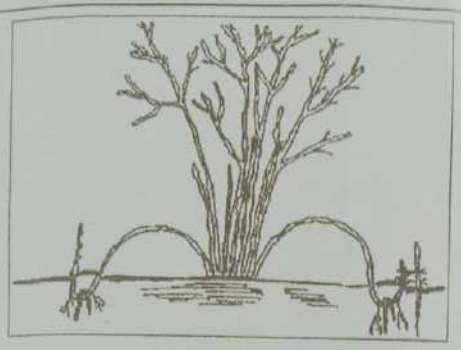

जड़ निकल आती है। इसे मातृवृक्ष से अलग कर पौधशाला में लगा दिया जाता है। अगले रोपण काल में पौधा खेत में रोपण के लिए तैयार हो जाता है। इस विधि से अमरूद तथा हैजलनट का प्रवर्द्धन होता है ।

2. सर्पिलाकार या यौगिक दाब

पौधो की शाखा (shoot) का पूरा लम्बाई मे कई जगह मिट्टी में दबा तथा कुछ गाँठ को हवा मिट्टी के ऊपर खुला छोड़ना यौगिक दाब कहलाता है। यह क्लीमैटिस, स्माईलेक्स, विस्टेरिया, मस्काडाईन अंगूर आदि में अपनाया जाता है। दाब में पेन्सिल इतनी मोटी शाखा की 2.5–4.0 सेमी. छाल को गोल आकार में हटा दिया जाता है इस भाग पर जड़ उत्प्रेरक का प्रयोग कर इसे मिट्टी से दबा दिया जाता है। मिट्टी के ऊपर खुला भाग से तना तथा

मिट्टी में दबे भाग से जड़ का विकास होता है। जब मिट्टी से दबे भाग से जड़ का फुटान हो जाता है, तब से मातृ पौधे से अलग कर पौधशाला में लगा दिया जाता है। जब पर्याप्त बढ़वार हो जाये, पौधे को अगली ऋतु में खेत में लगा दिया जाता है।

3. टीला या ठूंठ दाब (Mound layering or stooling)

यह उन पौधों में अपनाया जाता है जिसमे शाखायें बहुत सख्त होती है और उन्हें मोड़ना मुश्किल होता है। दाब तैयार करने के लिए मातृ पौधे को जमीन से 2.5 सेमी. ऊपर से काट दिया जाता है। ऐसा करने से जमीन सतह से कई शाखा फुटते हैं। जब ये शाखा कुछ सख्त हो जाते हैं 2.5–4.0 सेमी. गोलाकार छाल को हटाकर, पौध उत्प्रेक प्रयोग कर, ऊपर से मिट्टी की 15–20 सेमी. मोटी तह से ढक देते हैं। पौधे से 3–4 माह में जड़ फुटान हो जाता है। जड़ फुटान हो जाने पर शाखा को मातृ पौध से अलग कर पौधशाला में लगा दिया जाता है। अगली ऋतु में पौधे खेत में रोपण के लिए तैयार हो जाते हैं। यह विधि अमरूद, सेब, नाशपाती, किशमिश, गूजबेरी आदि प्रवर्द्धन में उपयोग किया जाता है।